मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्म भूभृताम्।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुण लब्धये।।

तत्त्वार्थ-सूत्र ग्रन्थराज के माध्यम से पंचम अध्याय के सूत्रों का वर्णन प्रारंभ हुआ है। पहला सूत्र कल आपके लिए बताया गया, जिसमें अजीवकाय के रूप में चार द्रव्यों को प्रस्तुत किया गया था। धर्म, अधर्म, आकाश और पुद्गल ये अजीव भी होते हैं और काय भी होते हैं। इन्हीं द्रव्यों के अलावा और भी द्रव्य होते हैं, उनका भी वर्णन आगे समय-समय पर आएगा।

Class 04

सभी अजीवकाय द्रव्य भी हैं

इन अजीव और काया के लिए आगे आचार्य कहते हैं, एक सूत्र लिखते हैं-

द्रव्याणि।।**2**।।

यह भी बताया गया है कि ये सभी द्रव्य हैं। आप लोगों को बहुत छोटा-सा सूत्र पढ़ने में ऐसा लग रहा होगा कि ऐसा क्यों कहना पड़ा? किंतु यह बहुत ही महत्वपूर्ण सूत्र है और इसी सूत्र के माध्यम से विश्व के अन्दर जितने भी ये द्रव्य फैले हुए हैं, उनकी सत्ता स्वीकृत होती है। द्रव्य हैं तो द्रव्य के अपने कुछ गुणधर्म होते हैं और जब द्रव्य कहा जाता है, तो उसी को हम science की language में substance कहते हैं, पदार्थ कहते हैं।

हम इन्हें अजीव अस्तिकाय भी कह सकते हैं क्योंकि 'द्रव्याणि' सूत्र इनके अस्तित्व को कहता है

जब हम बहुत ही force के साथ में इस बात का निर्णय करके कहते हैं कि ये सभी द्रव्य हैं तो इससे यह सिद्ध होता है कि ये सभी अजीव और काय के रूप में रहने वाले भिन्न-भिन्न पदार्थ हैं। धर्म एक अपने आप में एक भिन्न पदार्थ है, अधर्म एक भिन्न पदार्थ है। आकाश और पुद्गल भी अपने अस्तित्व को लिए हुए भिन्न-भिन्न पदार्थ हैं और इन्हें इसी रूप में यदि स्वीकार किया जाता है, तो इन सबको हम अजीव अस्तिकाय भी

कह सकते हैं। क्या कह सकते हैं? अजीव अस्तिकाय। ये सभी अजीव पदार्थों में आने वाले अपने अस्तित्व को धारण किए हुए काय स्वरूप द्रव्य हैं, पदार्थ हैं, इसलिए ये सभी अजीव अस्तिकाय हैं।

Science में **Quantum Field** के माध्यम से इसे समझाया जाता है

देखा जाए तो जो science आज हमें Quantum Field के रूप में जो physics के माध्यम से समझाता है, वह यहाँ इसी सूत्र के माध्यम से समझा जा सकता है कि ये सभी द्रव्य

- अपने अस्तित्व को धारण करने वाले हैं।
- बहुप्रदेशी हैं। लेकिन
- ये सभी अजीव रूप में हैं।

तो ये सभी अजीव अस्तिकाय के रूप में फैले हुए हैं और यह जो इन द्रव्यों का फैलाव है, इसी को Quantum Field के रूप में आज science कहता है। क्योंकि जो कुछ भी हमें इस संसार में दिखाई नहीं देने वाले भी पदार्थ हैं, वह भी विज्ञान कहीं न कहीं स्वीकारता है और उसकी energy को भी वह महसूस करने की कोशिश करता है। वह जो energy महसूस की जाती है, जिसका कि वह स्वयं किसी भी तरीके से आकलन नहीं कर पाता, उस energy को भी स्वीकार तो किया गया है। ये जितने भी अजीव हैं, ये सभी अजीव अस्तिकाय हैं तो इनकी अपनी जो energy होगी, वह अजीव रूप में ही होगी। इस तरह की जो energy होती है, उसको quantum field के रूप में विज्ञान जब स्वीकार करता है, तो उसके अन्दर जब किसी न किसी तरह के परिवर्तन होते हैं, उन परिवर्तनों के माध्यम से ही वह स्वीकार करने में आता है।

परिवर्तन**,** द्रव्य का स्वभाव है

द्रव्य है, तो इसका मतलब है कि उसमें परिवर्तन होता ही रहता है। द्रव्य

- कभी भी कूटस्थ नहीं होता।
- हमेशा एक जैसा नित्य स्वभाव वाला भी नहीं होता।
- द्रव्य में परिवर्तन होता है।

इसलिए वह द्रव्य हमेशा बना रहता है। उस द्रव्य के अन्दर यह जो परिवर्तन नाम का एक बहुत बड़ा गुणधर्म है, इसी के कारण से वह पदार्थ अपने अस्तित्व के साथ भी टिका रहता है। वह पदार्थ सबके साथ में रहकर के अपने अन्दर जितनी संभावनाएँ हैं, उसके अनुसार परिवर्तन भी करता रहता है।

द्रव्य में परिवर्तन अंतरंग और बाहय दो कारणों से होता है

हम देखें कि यह जो द्रव्य हमारे सामने है- धर्म, अधर्म, आकाश और पुद्गल इन द्रव्यों में भी परिवर्तन है। ये सभी द्रव्य के रूप में हैं तो कोई भी द्रव्य हो, एक सिद्धान्त है कि उसके अन्दर दो प्रकार के कारण होते हैं तभी वह द्रव्य अपनी सत्ता को बनाए रख सकता है। एक उसका अपना अंतरंग (अभ्यंतर) कारण होता है और एक बाहय कारण होता है।

- जो बाहय कारण होता है, वह बाहय द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के रूप में स्वीकारा जाता है।
- और जो अंतरंग कारण होता है, वह उस द्रव्य की अपनी निजी शक्ति होती है। जिस शक्ति को वह कभी भी छोड़ता नहीं है।

इन दोनों के माध्यम से ही उस द्रव्य में कुछ change होता है और वह change हमेशा उसके अन्दर चलता रहता है। Science भी इस चीज को स्वीकार करता है कि every substance has change and change is inevitable यानि जो परिवर्तन है वह भी अपरिवर्तनीय है। change को हम कभी भी change नहीं कर सकते हैं। हर चीज के अन्दर जो change होता है, उसको परिवर्तन कहा जाता है। वह परिवर्तन जो है, वह शाश्वत है, उसे हम रोक नहीं सकते हैं। कोई भी पदार्थ है, उसके अन्दर बाहय और अभ्यंतर इन दोनों ही कारण से कोई न कोई उसके अन्दर change होता है और यह change संभव है।

द्रव्य में परिवर्तन दो रूपों में संभव है

हम यहाँ देखें कि ये जितने भी पदार्थ हैं- धर्म, अधर्म, आकाश और पुद्गल, जिनको अभी यहाँ द्रव्य कहा जा रहा है, अगर यह पदार्थ भी हैं, ये द्रव्य के रूप में अपनी सत्ता को बनाए हुए हैं तो इनमें भी वह द्रव्य का गुणधर्म है, इनके अन्दर भी वह परिवर्तन स्वभाव है।

लेकिन वह परिवर्तन स्वभाव आपको तब ज्ञान में आएगा, जब आप द्रव्य का परिवर्तन दो रूपों में देखें। एक तो स्वभाव का परिवर्तन और एक स्वभाव का विभाव में परिवर्तन। क्या कहा? एक तो स्वभाव का। इसको और simple बनाएँ इस language के साथ कि

- स्वभाव का स्वभाव में परिवर्तन और
- स्वभाव का विभाव में परिवर्तन।

एक नई शब्दावली का प्रयोग करते हैं। क्या कहा? स्वभाव का स्वभाव में परिवर्तन और एक स्वभाव का विभाव में परिवर्तन तो यह आपको सही से समझ में आएगा। परिवर्तन होना नियम है, वह परिवर्तन कैसे हो? यह अलग बात है।

धर्म, अधर्म और आकाश इन तीन अजीव अस्तिकायों में स्वभाव रूप परिवर्तन ही होता है
परिवर्तन दोनों रूप में हो सकता है, स्वभाव का स्वभाव में परिवर्तन हो सकता है, स्वभाव का विभाव में परिवर्तन हो सकता है। यह depend करता है कि वह जो substance है, उसका nature क्या है? वह at present अपनी किस form में है? अगर वह पदार्थ धर्म, अधर्म और आकाश इन अस्तिकाय के रूप में अपना अस्तित्व रखे हुए है, तो यह जानना कि यह सभी अपने स्वभाव में हमेशा रहने वाले और स्वभाव में ही परिणमन करने वाले पदार्थ हैं। कौन-कौन से? धर्म, अधर्म और आकाश।

पुद्‌गल अजीव अस्तिकाय में स्वभाव से विभाव में परिवर्तन (परिणमन) होता है
पुद्‌गल को जब हम द्रव्य के रूप में कहें तो पुद्‌गल में परिणमन होता है और परिणमन उसका स्वभाव से विभाव में परिणमन होता है। पुद्‌गल का जो स्वभाव रूप देखा जाता है, पुद्‌गल की जो natural form है, वह एक atom होती है, जिसे हम परमाणु कहते हैं। वह जो परमाणु है, वह उसका अपना शुद्‌ध भाव है, शुद्‌ध उसकी state है और जब उसमें भी परिवर्तन होता है, तो वह स्कंध के रूप में परिवर्तित हो जाता है। तब उसका परिवर्तन स्वभाव से विभाव रूप परिवर्तन कहा जाता है। स्वभाव का स्वभाव में परिवर्तन इन तीन द्रव्यों में लगेगा- धर्म द्रव्य, अधर्म द्रव्य और आकाश द्रव्य में और स्वभाव का विभाव रूप परिवर्तन आपको पुद्‌गल द्रव्य में देखने में मिलेगा।

द्रव्य में बाहरी निमित्त के बिना परिणमन संभव नहीं

प्रत्येक द्रव्य का यह स्वभाव है कि वह अपने अंतरंग में अपना निजी शक्ति भी रखे हुए है और उसी शक्ति को परिवर्तित करने के लिए बाहरी कारण, बाहरी निमित्त भी उपस्थित होने चाहिए। अन्यथा कोई भी द्रव्य केवल अपनी निजी शक्ति से परिणमन नहीं कर सकता और कोई भी द्रव्य केवल बाह्य शक्ति के होने पर भी परिणमन नहीं कर सकता, दोनों चीजें आवश्यक हैं। द्रव्य के अन्दर स्वयं में परिणमन करने की अपनी निजी शक्ति होनी चाहिए और साथ-साथ उसके लिए बाह्य कारण द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के रूप में भी उपलब्ध होने चाहिए। अगर ये दोनों चीजें होंगी तो ही वह द्रव्य अपनी सत्ता को बनाए रखेगा और वही द्रव्य सत् कहलाएगा।

परिवर्तन सापेक्षिक होता है

जितने भी द्रव्य हैं, वह सब इसी रूप में सत् हमेशा बने रहते हैं। अपनी existence को हमेशा बनाए रखते हैं, इसलिए वह सत् कहलाते हैं। सत् रूप जो द्रव्य है, वह उसका वह भाग है, जो हमने कल बताया था, जिसे हम absolute truth कहते हैं। जो हमारे लिए परिवर्तन के रूप में देखने को मिलता है, वह relative truth होता है, जिसे हम theory of relativity के माध्यम से आज वर्तमान में जानते हैं। वह बिल्कुल यही theory है, जो Einstein ने हमको बताई है। जो theory अनादि काल से चली आ रही है, भगवान आदिनाथ तीर्थंकर ने भी वही theory बतायी और वही theory वर्धमान भगवान ने बतायी। बहुत हजारों वर्षों के बाद में अब Einstein ने जब उसको एक नई शब्दावली के साथ में आपके सामने उपस्थित किया, सापेक्षवाद का सिद्धान्त तो वह आपको एक science के रूप में सामने आया लेकिन इसमें नया कुछ भी नहीं है, वह यही theory of relativity है, जो यहाँ बतायी जा रही है। प्रत्येक पदार्थ में जो change होता है, वह सापेक्षिक होता है, निरपेक्ष परिवर्तन किसी में नहीं होता। निरपेक्ष का मतलब पदार्थ किसी अन्य पदार्थ की अपेक्षा न रखें और अपने आपको परिवर्तन कर लें, that is never possible.

धर्म, अधर्म और आकाश तीनों हमेशा शुद्ध ही रहे हैं और रहेंगे

कोई भी पदार्थ होगा, वह हमेशा किसी न किसी पदार्थ की सत्ता के साथ में ही अपनी सत्ता को जोड़कर के चलता है। यही यहाँ पर द्रव्य के स्वभाव को बताने के लिए यह सूत्र आया है कि इन सबको द्रव्य जानना। ये द्रव्य अकेले अपने अस्तित्व को धारण नहीं कर सकते हैं। इनके अस्तित्व को बनाए रखने के लिए भी दूसरा द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव आवश्यक है। जिन द्रव्यों का स्वभाव का स्वभाव में परिवर्तन हो रहा है, वह द्रव्य भी अपने आप में दूसरे द्रव्य की अपेक्षा रखते हैं, जब वह स्वभाव का स्वभाव में परिवर्तन करते हैं। धर्म द्रव्य कभी भी विभाव रूप परिणमन नहीं करता है, अधर्म द्रव्य में भी कभी विभाव रूप परिणमन नहीं होता है, आकाश द्रव्य में भी कभी विभाव रूप परिणमन नहीं होता है। उसमें कभी ऐसा विकार नहीं आता कि वह अपने द्रव्य के स्वरूप को छोड़कर के या किसी अन्य द्रव्य के साथ मिलकर के वह द्रव्य किसी अन्य रूप में परिणमन करता हुआ दिखाई दे जाए, यह इन तीनों द्रव्यों की नियति नहीं है। कौन-कौन से? धर्म, अधर्म और आकाश। These three substances are absolutely pure. यह क्या हैं? यह हमेशा शुद्ध द्रव्य रहे हैं और रहेंगे।

'द्रव्याणि' इस छोटे से सूत्र का बहुत बड़ा प्रयोजन है

इन तीनों ही द्रव्यों में शुद्धता होने के बावजूद भी इनमें परिवर्तन होता है, यह यहाँ 'द्रव्याणि' इस सूत्र से बताया जा रहा है। लोग पढ़ तो सब लेते हैं और सब पढ़े हुए हैं और पढ़ने के बावजूद भी किसी को उसकी जो भावात्मक अनुभूति होनी चाहिए कि यह सूत्र यहाँ क्यों हैं? यह किस भाव को बताने के लिए है? यह बहुत कम लोगों को पता रहता है। विद्वानों का काम केवल शास्त्रों का बखान करने का होता है। समझ आ रहा है? वह चीज जिस भाव के साथ लिखी गई, जिस भाव के साथ हमें प्रस्तुत की गई है, अगर हम उसके भाव को नहीं पकड़ेंगे तो वह चीज केवल हमारे लिए चार अक्षर हैं, तीन ही अक्षर हैं- द्रव्याणि। जब आप इस सूत्र को पढ़ेंगे तो सोचेंगे कि इसमें क्या व्याख्या की जाएगी? इसमें क्या कहा जाएगा? इसके बारे में क्या विशेष समझा जाएगा? द्रव्य हैं, तो हैं। धर्म भी द्रव्य है, पता है। अधर्म भी द्रव्य है, पता है। आकाश भी द्रव्य है, पता है लेकिन यह द्रव्य इतना कहने का वहाँ पर जो जोर डाला जा रहा है एक अलग सूत्र बना करके, यह अपने आप में

बड़ा प्रयोजनीय है। इसके अस्तित्व को स्वीकार करना है और इसके स्वभाव को भी स्वीकार करना है कि अगर इसका स्वभाव अपने शुद्ध रूप में है, तो यह शुद्ध ही रहेगा।

पदार्थ में परिणमन, उपादान और निमित्त के मिलने पर ही होता है

द्रव्य का स्वभाव है कि वह अपनी अंतरंग परिणमन करने की शक्ति रखता है, यह उसकी अपनी निजी उपादान योग्यता होती है और यही योग्यता में बाहरी निमित्त कारण बनता है। दुनिया में कोई भी ऐसा पदार्थ नहीं जो केवल अपने ही उपादान से परिणमन कर जाए, उसके लिए किसी बाह्य निमित्त की अपेक्षा ही न हो। कोई ऐसा पदार्थ नहीं! उपादान कितना भी सशक्त हो, कितनी भी अपने अन्दर परिणमन की योग्यता रखता हो, अगर उसके लिए द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव रुप पर निमित्त नहीं मिलेंगे तो वह कभी भी परिणमन कर ही नहीं सकता और पररूप परिणमन करने वाले निमित्त उसको सब मिल जाएँ लेकिन उसकी अपनी योग्यता न हो तो भी वह द्रव्य कभी परिणमन कर नहीं सकता। यह बातें बहुत अच्छे ढंग से समझने की हैं।

उपादान और निमित्त दोनों की योग्यता को न मानने पर हम एकांतवादी हो जाएँगे

इसलिए अच्छे ढंग से समझने की हैं क्योंकि द्रव्य के स्वभाव को समझने के बाद ही आप यह समझ पाएँगे कि द्रव्य में जो परिवर्तन होते हैं, उन परिवर्तनों में कौन-कौन सी चीजें नियामक हैं? और उन नियामक चीजों के बिना वह द्रव्य में जब परिवर्तन नहीं हो सकता तो अगर हम किसी एक चीज की नियामकता पर जोर देते हैं तो हम एकांतवादी होने में फिर कोई देर नहीं लगती है। भगवान महावीर के सिद्धान्त बहुत दूर छूट जाते हैं और हम एकान्तवादी हो करके अनेकान्त की प्रस्तुति करने का भी एक बहुत बड़ा साहस कर बैठते हैं। एकान्तवादी होने में देर नहीं लगती। अगर आप द्रव्य की शक्ति को दोनों रूप से स्वीकार न करें कि

- द्रव्य अपनी भी शक्ति धारण करता है। और
- दूसरे की शक्ति भी उसके लिए पर सापेक्ष हो करके उसके लिए काम में आती है।

तभी वह सापेक्षिकता का सिद्धान्त, अनेकान्त का सिद्धान्त, ये सब fit बैठते हैं। सापेक्षिकता के सिद्धान्त का जब इस तरीके से प्रारोपण किया जाएगा तभी आपको

अनेकान्त धर्म समझ में आ पाएगा और तभी वह अनेकान्त धर्म के माध्यम से आप समझ पाओगे, कोई भी द्रव्य एकान्त रूप से स्वतंत्र नहीं है। कोई भी द्रव्य! न अशुद्ध द्रव्य और न शुद्ध द्रव्य।

Class 05

द्रव्य का स्व-अस्तित्व अपनी निजी शक्ति के कारण से है लेकिन उस अस्तित्व को बनाए रखने में आकाश द्रव्य भी सहायक है।

अगर धर्म द्रव्य भी यहाँ इसी ब्रहमांड के अन्दर रह रहा है, तो उस धर्म द्रव्य के अन्दर अपनी निजी परिणमन की जो योग्यता है, वह तो इस रूप में है कि वह परिणमन कर रहा है, कूटस्थ नहीं है। उसके अन्दर भी change हो रहा है। लेकिन वह change अन्य द्रव्यों की संगति होने के बावजूद भी किसी रूप में, विकार रूप में नहीं हो रहा है, किसी अन्य रूप में नहीं हो रहा है, वह change उसका अपने ही स्वरूप में हो रहा है।

- अन्य द्रव्य उसके लिए सहायक हैं।
- अन्य द्रव्य की उपस्थिति भी आवश्यक है।
- अन्य द्रव्यों का निमित्त होना भी आवश्यक है।

अगर अन्य द्रव्य नहीं होंगे तो अकेला धर्म द्रव्य भी इस संसार में, ब्रहमांड में कहीं पर रह ही नहीं सकता, उसका कोई अस्तित्व नहीं हो सकता। द्रव्य का स्व-अस्तित्व अपनी निजी शक्ति के कारण से है लेकिन उस अस्तित्व को बनाए रखने में आकाश द्रव्य भी सहायक है। आकाश क्या करेगा? आकाश उस धर्म द्रव्य के लिए अवकाश दे रहा है, space दे रहा है। कौन दे रहा है? आकाश दे रहा है।

धर्म द्रव्य जैसे शुद्ध द्रव्यों के परिणमन में भी अन्य द्रव्य सहायक है

धर्म द्रव्य के लिए परिणमन कराने में एकान्त रूप से हम अगर मान भी ले कि वह शुद्ध द्रव्य होने के कारण से उसे कोई दूसरा द्रव्य परिणमन में सहायक नहीं होता तो वह द्रव्य हम कह सकेंगे जीव द्रव्य सहायक नहीं होता, पुद्गल द्रव्य सहायक नहीं होता लेकिन

आकाश द्रव्य सहायक है, काल द्रव्य सहायक है। किसके लिए? उस धर्म द्रव्य के अन्दर जो परिणमन हो रहा है, वह काल द्रव्य के बिना नहीं हो सकता। अगर काल द्रव्य न हो तो धर्म द्रव्य अपने स्वरूप में किसी भी तरीके का परिवर्तन कर नहीं सकता। स्वभाव का स्वभाव में भी जो परिवर्तन हो रहा है, वह उसकी अपनी शक्ति के कारण से होते हुए भी बिना काल द्रव्य के संभव नहीं है और वह अगर इस ब्रह्मांड में अपना अस्तित्व बनाए हुए है तो बिना आकाश द्रव्य के वह भी संभव नहीं है।

प्रत्येक द्रव्य का अस्तित्व पर-द्रव्य सापेक्ष है

आकाश भी एक अस्तिकाय है। काल भी अपने आप में एक द्रव्य है, उसे हम अस्तिकाय नहीं कहते लेकिन वह भी एक द्रव्य है। धर्म एक अस्तिकाय है, अधर्म द्रव्य भी एक अस्तिकाय है और यह दोनों द्रव्यों का अस्तित्व जो बना हुआ है, यह परद्रव्य सापेक्ष होने पर ही बना हुआ है। अपने स्व सापेक्षता से कोई भी द्रव्य हमेशा नहीं रह सकता। यह अच्छे ढंग से समझने की कोशिश करना क्योंकि यह द्रव्य का स्वभाव है।

पर-द्रव्य, पर-क्षेत्र, पर-काल और पर-भाव

हर द्रव्य के लिए अपनी परिणमन शक्ति होने के साथ-साथ जब तक उसे द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव न मिले, वह पर न मिले तब तक वह द्रव्य परिणमन नहीं कर सकता।

- परद्रव्य का मतलब हर द्रव्य के लिए परद्रव्य आवश्यक है।
- परद्रव्य के साथ परक्षेत्र भी आवश्यक है। परक्षेत्र का मतलब हम इस क्षेत्र को आकाश द्रव्य के रूप में समझ सकते हैं। आकाश द्रव्य हमारे लिए हमेशा दूसरा द्रव्य है लेकिन वह क्षेत्र देता है, तो वह परक्षेत्र है।
- काल द्रव्य किसी काल के माध्यम से कहा गया है। और
- जो भाव है, भाव यानि कि जो पर्याय है, उसको भाव कहा जाता है।

पर-द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव की शक्ति को स्वीकार न करना, मिथ्यात्व है

अगर दूसरे द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव रूप पर्याय, अन्य द्रव्यों की पर्याय, अन्य द्रव्यों की परिणमन शक्तियाँ अगर उस द्रव्य के साथ न जुड़ी हो तो कोई भी दुनिया का द्रव्य अपने अस्तित्व को बनाए रख ही नहीं सकता। सुन रहे हो?

- एकान्त रूप से आत्मा को स्वतंत्र कहने वाले,
- एकान्त रूप से द्रव्य की स्वतंत्र सत्ता को स्वीकार करने वाले,
- एकान्त रूप से द्रव्य को परद्रव्यों से बिल्कुल पृथक मानने वाले,
- एकान्त रूप से द्रव्य को बिल्कुल शुद्ध मान करके उसमें परद्रव्य से कोई परिणमन नहीं मानने वाले,

ऐसे तमाम एकान्त मिथ्यादृष्टि सचेत हों। कोई भी द्रव्य एकान्त रूप से अगर स्वयं परिणमन करने की शक्ति रखने लग जाए तो द्रव्य की परिभाषा ही बिगड़ जाए। द्रव्य की यह परिभाषा ही नहीं है। द्रव्य की परिभाषा ही यही है कि जो अंतरंग और बहिरंग निमित्तों के माध्यम से अपने अस्तित्व को बनाए रखता है, उसी का नाम द्रव्य है।

द्रव्य-अस्तिकाय के रूप में सापेक्षता का सिद्धान्त

कोई भी द्रव्य हो! अभी तो हम जीव की बात ही नहीं कर रहे हैं। अभी तो मैं धर्म और अधर्म द्रव्य की बात कर रहा हूँ। जो धर्म और अधर्म द्रव्य एकान्ततया शुद्ध हैं लेकिन इनके भी परिणमन में आकाश द्रव्य, काल द्रव्य कारण है। आकाश के बिना ये द्रव्य रह नहीं सकते। काल के बिना ये द्रव्य परिणमन कर नहीं सकते। भले ही इनमें परिणमन करने की अपनी शक्ति हो लेकिन ये दूसरे द्रव्यों की सापेक्षता से ही परिणमन करते हैं। इसी को बोलते हैं- सापेक्षवाद का सिद्धान्त। इस सिद्धान्त को समझें। आज विश्व के सामने हम अगर इस सापेक्षवाद के सिद्धान्त को इस तरीके से प्रस्तुत करेंगे तभी हम समझा पाएँगे कि भगवान महावीर स्वामी का जो यह द्रव्य-अस्तिकाय के रूप में जो हमें ब्रह्मांड का वर्णन किया गया है, ये सारी की सारी cosmology जो हमें बताई गई है, यह सब Einstein की theory से कहीं अलग नहीं है। Jain science और modern science इस तरीके से ही relate करके हम दुनिया के सामने रख सकते हैं। यह बात आज की science मानती है- 'किसी भी द्रव्य के लिए यह परिणमन हो रहा है, तो वह उसमें कारण है और उसके कारण के बिना उसका अस्तित्व नहीं है।' यह पहले हम अपने दिमाग में अच्छे ढंग से बिठा लेंगे तभी हम आगे की चीजों को समझ पाएँगे।

जैन विज्ञान और **modern** विज्ञान दोनों में ही अंतरंग और बहिरंग दोनों निमित्तों को स्वीकार किया गया है

द्रव्य के अन्दर जो शक्ति है, वह 'उभय निमित्त वशात्'। वह क्या कहा गया? 'उभय निमित्त वशात्'। उभय मतलब दो; हमेशा दो निमित्तों के कारण से शक्ति चलती है- अंतरंग निमित्त और बहिरंग निमित्त। अंतरंग को उपादान शक्ति कहते हैं। बहिरंग को बाहरी निमित्त शक्ति कहा जाता है और अंतरंग को भी एक निमित्त के रूप में स्वीकार किया जाता है। जो भी एक अंतरंग निमित्त है और एक बहिरंग निमित्त है, यह दोनों ही internal और external, यह दोनों ही cause यही किसी तरह का कोई effect create एक करते हैं, तभी जाकर के किसी भी तरीके का कोई भी energy का vibration होता है। modern science के अनुसार वही सब energy मिली हुई यह quantum field कहलाती है।

- जिसे हम धर्मास्तिकाय कह रहे हैं, वह हमारे लिए एक accelerating potential है।
- जो हमारे लिए एक आकाश के रूप में है, यह हमें एक स्थान दे रहा है, यह एक space देने का काम कर रहा है।

इसकी सबकी अपनी-अपनी अलग-अलग field है और सबकी अपनी-अपनी अलग-अलग कार्य क्षमता है। जब हम इन सब कार्य क्षमताओं को मिला लेते हैं तब जो एक चीज बन जाती है, उसी का नाम Cosmos कहलाता है। जो वर्तमान में जिसे तरह-तरह के सिद्धान्त quantum physics, quantum field के रूप में जो प्रस्तुत की जाती है, वह इसी सिद्धान्त के अनुसार की जाती है और यह सब वैज्ञानिकों ने माना है। आधुनिक वैज्ञानिकों में जितना Einstein ने समझा है, उतना Newton आदि पुराने वैज्ञानिकों ने नहीं समझा।

द्रव्यों के अस्तित्व को **Theory of relativity** से समझ सकते है

यह जो Einstein की अवधारणा है, यह बहुत कुछ भगवान महावीर स्वामी के बताए हुए सिद्धान्तों के अनुरूप ही है इसलिए इन सब द्रव्यों के अस्तित्व को स्वीकार करने के लिए हमें हमेशा अपने दिमाग में यह Theory of relativity को रखना चाहिए। यह सिद्धान्त आपको इस नए नाम से ज्यादा समझ में आएगा- Theory of relativity. कोई भी द्रव्य में

परिवर्तन हो रहा है, तो किसी न किसी के सापेक्ष है, निरपेक्ष कुछ नहीं है। निरपेक्ष सत् कुछ नहीं होता, सापेक्ष सत् ही होता है। सापेक्ष सत् का मतलब कि वह सत् भी अगर बना हुआ है, तो किसी न किसी की सापेक्षता से ही बना हुआ है। यह पूरा का पूरा लोक में छह द्रव्यों का जो अस्तित्व है, यह सब सापेक्षिक सत् के ही रूप में है, अलग-अलग नहीं कहा गया। सापेक्षिक होते हुए भी अपने अस्तित्व को बनाए रखकर के दूसरे के अस्तित्व के माध्यम से भी अपने में परिवर्तन करके अपनी सत्ता बनाए रखी जा सकती है, इसी का नाम सापेक्षिक सत् है।

शुद्ध द्रव्य का परिणमन भी एकान्त रूप से स्वतंत्र नहीं

एकान्त रूप से शुद्ध द्रव्य भी बिल्कुल स्वतंत्र या एकान्तिक रूप से शुद्ध द्रव्य अपने परिणमन में किसी द्रव्य की सत्ता या किसी का हस्तक्षेप स्वीकार ही न करते हों, यह द्रव्य का स्वभाव ही नहीं है। धर्म द्रव्य का भी स्वभाव नहीं, अधर्म द्रव्य का भी स्वभाव नहीं, आकाश द्रव्य का भी स्वभाव नहीं। आप कहो, आकाश में किसकी सापेक्षिकता हो गई? अगर आकाश में यह अन्य द्रव्य न हो तो आकाश की अवगाहन क्षमता, आकाश का कार्य देखने में कैसे आएगा? आकाश भी अगर अपनी द्रव्यत्व शक्ति के माध्यम से अपनी सत्ता को बनाए हुए है, तो वह भी बिना काल द्रव्य के नहीं बनाए रख सकता है क्योंकि द्रव्य में जो परिणमन हो रहा है, वह काल द्रव्य के माध्यम से ही हो रहा है।

प्रत्येक द्रव्य का परिणमन काल द्रव्य के सापेक्ष होता है

अगर हम किसी द्रव्य को कहते हैं-

- यह अनन्त काल से ऐसा है।
- अनन्त काल से यह अपनी इसी स्वभाविक रूप में है।
- अनन्त काल से यह द्रव्य की सत्ता शाश्वत है।

तो हम बीच में काल को क्यों ला रहे हैं? द्रव्य की शाश्वत सत्ता को समझाने के लिए हमें बीच में काल क्यों लाना पड़ता है? द्रव्य शाश्वत है। जैसे ही हम शाश्वत कहते हैं, हमारा दिमाग बिल्कुल time factor के ऊपर जाता है। इसी को जब हम समझते हैं तभी हमें समझ में आता है कि हर द्रव्य के लिए दूसरा द्रव्य कुछ न कुछ सापेक्षता रखता है। आकाश

द्रव्य के लिए जितने भी अन्य द्रव्य हैं, वे अन्य द्रव्य उसके आकाश द्रव्य की गुण के कारण से आकाश में रह रहे हैं तो आकाश द्रव्य का कार्य दिखाई दे रहा है कि यह अवगाहनत्व का कार्य आकाश द्रव्य का है क्योंकि यह अन्य द्रव्यों को रहने के लिए आकाश दे रहा है। अगर आकाश द्रव्य स्वयं भी अपने में अगर परिणमन कर रहा है, शुद्ध, शुद्ध के रूप में परिणमन कर रहा है, स्वाभाविक का स्वाभाविक में परिणमन हो रहा है, तो वह परिणमन भी काल के बिना नहीं होता। तभी हम कहते हैं- अनन्त काल से वह द्रव्य शुद्ध है।

हम पुद्गल द्रव्य के माध्यम से द्रव्य के परिणमन को समझ सकते है, क्योंकि यह हमें दिखाई देता है
यह समझना आपके लिए कठिन सा लग रहा होगा क्योंकि

- न आपको धर्म दिख रहा है।
- न अधर्म दिख रहा है।
- न आकाश दिख रहा है।
- न काल दिख रहा है।

अगर कुछ समझ में आ सकता है, तो इस पुद्गल के माध्यम से आ सकता है। यह पुद्गल भी द्रव्य है, और कोई भी पुद्गल द्रव्य अपनी अंतरंग शक्ति में परिणमन करने की क्षमता रखते हुए अगर बाहय द्रव्य का निमित्त न ले तो कोई भी पुद्गल द्रव्य परिणमन नहीं कर सकता। यह आप अच्छे से समझ सकते हो। जितने भी पुद्गल द्रव्य में परिणमन होते हैं, अपनी अंतरंग शक्ति के अनुरूप ही होते हैं। मान लो यह सामने लोहे की railing दिख रही है, लोहा है! अगर हम इस लोहे को गलाएँगे, इस लोहे को किसी न किसी रूप से पिघलाएँगे तो हमें अग्नि की जरूरत पड़ेगी। इस लोहे को कुछ परिवर्तित करने के लिए अग्नि के बिना इस लोहे में परिवर्तन नहीं आ सकता क्योंकि इसकी melting form जो बनेगी, वह अग्नि के बिना नहीं बनेगी। आप उसको तोड़ नहीं सकते हो, आप उसको किसी भी रूप से परिवर्तित करने के लिए उसको आप को गलाना पड़ेगा और गलाने के लिए आपको अग्नि की सहायता लेनी पड़ेगी। यह अग्नि के बिना लोहा अपनी form को change नहीं कर सकता।

पुद्गल में भी परिणमन स्वयं की शक्ति से होता है, पर बाह्य निमित्त के बिना नहीं होता अब देखो! पुद्गलों की शक्तियाँ अपनी-अपनी अलग-अलग होती हैं। अगर आपको लकड़ी को change करना है, तो अग्नि की जरूरत नहीं पड़ेगी क्योंकि लकड़ी में अगर अग्नि डाल दोगे तो लकड़ी जल जाएगी। लोहे में अग्नि डालोगे तो लोहे के अन्दर मुलायमता आएगी और फिर हम उसको जिस रूप में ढ़ाल पाएँगे, उसको हम उस रूप में ढ़ाल देंगे। प्रत्येक द्रव्य की अपनी-अपनी जो पौद्गलिक शक्तियाँ हैं, हर द्रव्य अपनी इन्हीं शक्तियों के अनुसार चल रहा है। परिणमन बाह्य निमित्त के बिना कभी नहीं होता। पुद्गल द्रव्य के अन्दर यह परिणमन दिखाई दे रहा है, लकड़ी भी अपना परिणमन कर रही है, तो बाह्य निमित्तों के अनुसार कर रही है। लकड़ी के लिए अगर हम उसको पानी में डाल दे, पानी का संपर्क ज्यादा वह पा ले, जल्दी गल जाएगी, जल्दी नष्ट हो जाएगी। लोहे को हम पानी में डाले रखें, कुछ नहीं बिगड़ेगा उसका। थोड़ा जंग खा सकता है लेकिन नष्ट नहीं होगा। हर चीज का अपना-अपना परिणमन और जो चीज जिससे effected हो रही है, वह चीज भी उतना effect डालती है, जितनी परिणमन की शक्ति उस अपने निजी द्रव्य में होती है। यह पुद्गल का परिणमन हमेशा अगर आपको दिखाई देगा तो अपनी शक्ति के साथ-साथ परद्रव्य की शक्ति को लेकर के चलता है। कोई भी पुद्गल में change लाओगे, आपको परद्रव्य का सहारा लेना ही पड़ेगा। अपने अन्दर उसकी change करने की क्षमता होते हुए भी वह कहीं न कहीं वातावरण का, मौसम का आधार लेकर के ही उसमें परिवर्तन आता है।

Class 06

अगर कोई वृक्ष पर फल भी आपको लगा हुआ दिखाई देता है, तो वृक्ष के फल में भी परिवर्तन जो आता है, हरा, काला, लाल, पीला, तरह-तरह का कच्चा-पक्का यह सब परिवर्तन उसके अन्दर आ रहे हैं लेकिन उसके साथ-साथ जब तक बाह्य द्रव्य गर्मी के रूप में, सर्दी के रूप में, हवा के रूप में, पानी के रूप में, ये सब न मिले तब तक उसने यह सब

परिवर्तन संभव नहीं होता है। इससे क्या समझना है? प्रत्येक द्रव्य की अपनी निजी शक्ति होती है लेकिन परनिमित्तों के बिना कोई भी द्रव्य में परिणमन नहीं होता है।

द्रव्य का परिणमन परसापेक्ष है पराधीन नहीं

इससे तो महाराज क्या होगा? द्रव्य निमित्त के आश्रित हो जाएगा, द्रव्य पराधीन हो जाएगा! द्रव्य की उपादान शक्ति पर के आश्रित होने पर तो सब स्वतंत्रता द्रव्य की बिगड़ जाएगी! आपको डर किस चीज का पड़ रहा है? जो तीर्थंकरों ने बतलाया है, पहले उसको तो संभाल कर के सुनने की कोशिश तो करो। हम अपना ज्ञान पहले लगा देते हैं। जो तीर्थंकरों ने बताया है, हम उसे तो पचाते नहीं हैं, उसको पचाने की कोशिश नहीं करते हैं। जो हमें दूसरे विद्वान सिखा देते हैं, उसको पचा लेते हैं। द्रव्य का जब स्वभाव ही इस रूप में है, तो आपको डर क्या पड़ा है? द्रव्य पराधीन हो जाएगा? पराधीन कौन-सा द्रव्य हो रहा है? सब द्रव्य स्वाधीन ही हैं। अब पराधीन हैं तो पराधीनता भी हमें स्वीकार है क्योंकि पर के अधीन हुए बिना द्रव्य में कोई परिणमन होता ही नहीं। चाहे वह पुद्गल द्रव्य हो और चाहे वह यह धर्म, अधर्म, आकाश द्रव्य हो और या आगे आने वाला एक द्रव्य और है-

जीवाश्च।।**3**।।

क्या है? जीव भी द्रव्य है।

जीव द्रव्य भी परिणमन स्वभाव वाला है

यह भी द्रव्य है, तो इसमें भी परिणमन। द्रव्य का तो स्वभाव सबका एक जैसा है। अब आप कहो कि यह स्वभाव पुद्गलों का होगा, अजीव द्रव्यों का होगा, जीव का नहीं है, तो आचार्य कहते हैं- नहीं! यह जो **'च'** लगा हुआ है 'जीवाश्च' यह 'च' किसके लिए है? यह जीव भी द्रव्य हैं। और जीव यहाँ पर बहुत से बताए जा रहे हैं, इसलिए individual सब जितने भी अलग-अलग जीव हैं, वे सब अपना अलग-अलग अस्तित्व रखे हुए हैं और सभी जीव हैं। इसलिए यहाँ पर 'जीवश्च' एकवचन में नहीं कहा। क्या कहा? 'जीवाश्च'। अगर एकवचन कह देते तो फिर वह एकोब्रह्मा वाली बात हो जाती। बस एक ब्रह्मा ही है, बस यहाँ कुछ नहीं है।

प्रत्येक जीव ब्रह्मा है

वह ब्रह्मा यहाँ नहीं है। हर जीव अपने आप में ब्रह्मा है। हर जीव के अन्दर ब्रह्म मतलब होता है बढ़ने की शक्ति, power of evolution इसी को बोलते हैं। यह उसके अन्दर है, इसलिए यहाँ पर जीव को भी द्रव्य कहा गया है। जीव द्रव्य का भी वही स्वभाव है, जो इन चार-पाँच द्रव्यों के स्वभाव आपको बताए गए हैं। आखिर जो द्रव्य संसार में रह रहे हैं, उनमें से कुछ द्रव्य अपनी quality अलग रखें, एक द्रव्य अलग रखें, बाकी सब द्रव्य तो एक-दूसरे के आश्रित होकर के रहें, एक द्रव्य निराश्रित हो करके रहे, यह संभव नहीं है। द्रव्य की परिभाषा सबमें एक जैसी लगेगी। अंतरंग कारण जीव के पास में होगा तभी जीव परिणमन करता है और बाहरी निमित्त उसके जैसे मिलते हैं, उसी के अनुसार वह परिणमन कर जाता है। शुद्ध का स्वभाव का स्वभाव में परिणमन होता है, अशुद्ध द्रव्य का स्वभाव का विभाव में परिणमन होता है।

जीव द्रव्य में चेतनता **consciousness** है

द्रव्य, जीव द्रव्य में एक consciousness है। यह सब द्रव्यों से differ क्यों हो गया? क्योंकि इसमें एक quality है, जिसको बोलते हैं consciousness. अतः वह द्रव्य अपनी परिणमन को संभालने के लिए कोई पुरुषार्थ कर सकता है क्योंकि उसके पास में consciousness है। वह अशुद्ध है, तो अशुद्ध को संभाल सकता है लेकिन शुद्ध होने के लिए भी उसे परनिमित्तों की आवश्यकता पड़ेगी और शुद्ध होने के बाद भी परनिमित्तों की आवश्यकता पड़ेगी। द्रव्य की स्वतंत्रता का एकान्तिक बखान करने वाले विद्वान लोग कान में थोड़ी सी गरम-गरम तेल डालकर के सुनने की कोशिश करें ताकि कान खुल जाये। क्या बोले? काल द्रव्य में भी, हाँ! काल की बात बाद में कर लेंगे, काल तो महाकाल है ही है।

जीव द्रव्य का परिणमन स्वतंत्र है, यह एकांतिक अवधारणा है

यह सबसे बड़ा जो महाकाल है, महाभूत, यह एकान्त 👇 का जो लोगों के सामने आ रहा है,

- उपादान शक्ति, द्रव्य की अपनी शक्ति, स्वतंत्र है।
- द्रव्य, चैतन्य आत्मा स्वतंत्र एक इकाई है, वह किसी के ऊपर आधारित नहीं है।

- उसे किसी निमित्तों की आवश्यकता नहीं है।

इस तरीके की जो अवधारणा लेकर के तीर्थंकर भगवान की देशना को आगे जो बढ़ाने वाले एकांतिक लोग हैं, उनके लिए कह रहा हूँ, अपने कान में थोड़ा सा क्या करें? गरम-गरम सरसों का तेल डालें ताकि हमारे शब्द उनके कान के भीतर तक घुस सकें। जीव द्रव्य भी अपना परिणमन करने के लिए पुद्गल या अन्य द्रव्यों के आश्रित रहता है और शुद्ध होने के बावजूद भी वह अन्य द्रव्यों के आश्रित रहकर के ही परिणमन करता है। यह भी उतना ही सच है, जितना अन्य द्रव्यों के लिए बताया गया है। आचार्यों ने जो समझाया है, हम पहले उसे समझने की कोशिश करें। मैं अपनी तरफ से एक अक्षर भी अन्यथा नहीं बोल रहा हूँ। यह अकलंक देव के वचनों के अनुसार आपको समझा रहा हूँ, जो अकलंक देव महान दार्शनिक, महान न्यायिक आचार्य हुए हैं, उनकी यह परिभाषा है। द्रव्य जब तक किसी भी पदार्थ के साथ में रह रहा है तभी तक वह द्रव्य है, सापेक्षिक सत्ता के साथ में ही वह बना रहता है।

दाल के उदाहरण से उपादान और निमित्त की भूमिका को समझा जा सकता है

उदाहरण देकर के आचार्यों ने समझाया है कि जैसे मान लो, कोई भी पदार्थ है। दाल है! दाल को आप बोरे में रखे हुए हो, रखे रहो। जब तक अग्नि का निमित्त नहीं मिलेगा, अग्नि का संपर्क नहीं मिलेगा, वह दाल पकने वाली नहीं। दाल में पकने की शक्ति है लेकिन उसकी शक्ति को प्रकट करने के लिए आपको अग्नि, पानी सबका संयोग देना उसके लिए आवश्यक है और जिसमें वह शक्ति नहीं है, ऐसी भी एक दाल के दाने होते हैं। क्या बोलते हैं उनको? ठर्रा मोठ, उड़दु-उड़दु कुछ और भी बोलते हैं कुछ लोग। वह भी एक दाना होता है, उसको हम कितना ही पानी में, कितना ही अग्नि में जलायें, उसमें वह शक्ति नहीं होती तो वह कभी पकता नहीं है। यह दोनों उदाहरण ध्यान में रखने के लिए हैं।

- जिसमें परिणमन करने की शक्ति है, वही परिणमन करेगा लेकिन बिना निमित्त के परिणमन कर नहीं सकता और
- जिसमें परिणमन करने की शक्ति नहीं है, उसे निमित्त कभी परिणमन करा सकते नहीं।

इस तरह की जो अवधारणा आपके अन्दर आएगी, यही समीचीन ज्ञान और यही जो है सापेक्षिकता का सिद्धान्त है।

प्रत्येक द्रव्य अपने स्वभाव के अनुसार ही परिणमन करता है

द्रव्य अपने स्वभाव के अनुसार ही परिणमन करता है। अगर वह अपने स्वभाव के अनुसार न करे तो धर्म द्रव्य भी अधर्म द्रव्य बन जाए, जीव भी पुद्गल बन जाए, पुद्गल भी जीव बन जाए, यह सब हो जाएगा। लेकिन नहीं! द्रव्य अपनी स्वाभाविक शक्ति को बनाए रखते हुए, अपनी शक्ति के अनुसार परिणमन करते हुए, बाह्य निमित्तों के माध्यम से ही परिणमन करता है।

सापेक्षता के बिना संसार का अस्तित्व ही संभव नहीं

यह सब हमें कौन-सी चीज सिखा रही है? द्रव्याणि। यह दोनों सूत्रों के बीच में देखो एक तरफ अजीवकाय है और एक तरफ जीवास्तिकाय है। 'जीवाश्च' और एक तरफ अजीवकाया, यह सब अजीव और जीव दोनों का संतुलन बनाने के लिए बीच में सूत्र है 'द्रव्याणि' और यह द्रव्याणि दोनों तरफ belong कर रहा है। तुम भी द्रव्य हो, तुम भी द्रव्य हो। अगर द्रव्य बने रहना चाहते हो, तुम इधर देखो, तुम इधर देखो। अगर तुम्हें अपने-अपने अस्तित्व में रहना है, कोई बात नहीं, रहो। लेकिन एक-दूसरे की सापेक्षता के बिना तो संसार का अस्तित्व ही संभव नहीं है। किसी भी द्रव्य का अस्तित्व ही संभव नहीं है।

'द्रव्याणि' सूत्र bridge की तरह है सूत्र 1 और 3 के बीच में

यह बहुत अच्छी symmetry है, सूत्रों का बहुत अच्छा formation है। 'द्रव्याणि' यह सूत्र बीच में है, इधर जीव द्रव्य हैं बहुत सारे और इधर अजीव द्रव्य है बहुत सारे और इन सबको 'द्रव्याणि' इस सूत्र ने ऐसा बांध रखा है कि तुम सब आपस में बंधे हुए हो। किस रूप में? द्रव्य रूप में। तुम सब द्रव्य हो, मैं तुमको द्रव्य बनाए रखूँगा। कब तक? जब तक कि तुम इस तरह की इस सापेक्षता के सिद्धान्त को स्वीकार करते रहोगे। यह 'द्रव्याणि' यह सूत्र एक bridge का काम कर रहा है, दोनों सूत्रों में। 'जीवाश्च' और इधर यह सूत्र .....।

'द्रव्य' शब्द की व्युत्पत्ति

द्रूश् धातु से यह द्रव्य शब्द बनता है, जिसका मतलब होता है जो

- द्रूयंते,
- द्रवति,
- द्रोश्यन्ति,

जो कभी मतलब चलता है, परिणमन करता है, अपने किसी न किसी रूप में जिसके अन्दर वह कुछ न कुछ प्राप्त करता रहता है और

- जो अपनी ही गुण पर्यायों के अनुसार उन गुण पर्यायों को प्राप्त करता था,
- करता है और
- करता रहेगा,

वह हमेशा द्रव्य बना रहेगा। यानि यह द्रव्य शब्द तीन काल को समाहित किए हुए है। द्रव्य जैसा पहले था, वैसा अभी भी है और आगे भी वैसा ही रहेगा। अजीव अजीव ही रहेगा, जीव जीव ही रहेगा। जीव कभी अजीव नहीं होता, अजीव कभी जीव नहीं होता। जीव अपने ही गुण पर्यायों में परिणमन करता है। यह द्रव्य शब्द जिस तरह से जीव के साथ रहता है, वैसा अजीव के साथ में रहता है। द्रव्य का मतलब क्या हो गया? उसकी अपनी जो गुणवत्ता है, अपनी जो परिणमन की शक्ति है, उसी शक्ति में वह द्रव्य परिणमन करता है लेकिन पर सापेक्षता के साथ करता है।

द्रव्य का परिणमन पर वस्तुओं से प्रभावित होता है, आम का उदाहरण

आम! अगर हम डाल पर लटका रखते हैं और वह वैसा का वैसा ही बना रहता है, तो उसको पकने में time लगता है, अगर हम उसको किसी पाला या किसी गरम चीज के अन्दर उसको रख करके उसको पकाने की कोशिश करते हैं तो वह उस डाल की अपेक्षा से जल्दी पक जाता है। यह क्यों हुआ, कैसे हुआ? द्रव्य जैसा परिणमन करना चाह रहा है, वैसा परिणाम कर रहा है, लेकिन उस द्रव्य के परिणमन में हम पर-वस्तुओं की सहायता से उस द्रव्य के परिणमन की गति को भी हम maintain कर सकते हैं।

- कितना समय लगता था, कितनी जल्दी हो गया? अथवा

- हम उसको colour भी change कर सकते हैं।
- हम उसकी smell change कर सकते हैं।
- हम उसके अन्दर और भी किसी न किसी की तरीके से cut करके उसके और भी दूसरे रूप बना सकते हैं।

यह सब जो द्रव्य में परिवर्तन होते हैं, जब उसने परिवर्तन होने की क्षमता होती है तभी होते हैं। विज्ञान का काम सिर्फ इतना ही होता है, हर पुद्गल द्रव्य के अन्दर यह देखना कि इसके अन्दर क्या-क्या possibility है? क्या-क्या इसके अन्दर potentiality है? विज्ञान सिर्फ उन्हीं संभावनाओं को उभार कर सामने लाता है लेकिन वह सब potentiality उस द्रव्य की अपनी nature होती है और वह उसी के अनुसार परिणमन करता है।

जीव द्रव्य के परिणमन में छहों द्रव्य सहायक है

यह द्रव्य का परिणमन जिस तरह से हमें पुद्गल में दिखाई देता है, वैसा ही जीव द्रव्य के साथ भी होता है। जीव द्रव्य भी शुद्ध है, शुद्ध का स्वभाव में स्वभाव का परिणमन होगा और वह परिणमन भी पर-द्रव्य के सापेक्ष होगा। उसमें

- धर्म द्रव्य भी सहायक है।
- अधर्म द्रव्य भी सहायक है।
- काल द्रव्य भी सहायक है।
- आकाश द्रव्य भी सहायक है। और
- किसी रूप में पुद्गल द्रव्य भी सहायक है।

समय पर वह भी बता दूँगा।

आज की कक्षा का सार बताते हुए जैन धर्म की वैज्ञानिकता

आज आपने क्या सीखा? ज्यादा नहीं सीखो, थोड़ी-सी चीज सीखो लेकिन पक्की सीखो। कोई भी द्रव्य अपने स्वभाव में ही परिणमन करता है लेकिन स्वभाव के अनुसार परिणमन करते हुए अपनी निजी शक्ति को रखते हुए भी पर द्रव्यों की सापेक्षता से ही परिणमन करता है। इतना-सा आपको सीखना है तभी आप सही ढंग से वैज्ञानिक बन पाओगे। मैं आपको पढ़ा नहीं रहा हूँ, वैज्ञानिक बना रहा हूँ। पढ़ने के लिए तो बहुत सारी टीकाएँ हैं,

दुनिया के पंडित हैं, दुनिया के लोग हैं दुनिया में। तत्त्वार्थ-सूत्र आजकल तो कोई छोटे से छोटा बच्चा भी पढ़ा लेता है। जिसने कोई भी hostel में रहकर थोड़ी भी शास्त्री पढ़ ली, सब पढ़ते हैं, सब पढ़ाते हैं। दुनिया में पढ़ने-पढ़ाने की कोई कमी नहीं है। मैं आपको पढ़ा नहीं रहा हूँ, मैं आपको वैज्ञानिकता सिखा रहा हूँ। भगवान महावीर स्वामी की जो व्यापकता है, वह बता रहा हूँ। अब वह कितनी आपको समझ में आती है? यह आपकी अपनी शक्ति है। ज्ञान शक्ति यह आपकी अपनी ग्रहण करने की क्षमता है, तो उसके अनुसार इन सूत्रों का अर्थ समझना।

महावीर भगवान की जय। 🙏🙏🙏